ISBN : 978-93-93705-66-2

Vol. No. 03, Sl. No. 03

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी

Brahmavart Nirjharni

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका

Articles & Creative Writings Published in both Hindi & English

2024

ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज

मन्धना, कानपुर – 209 217

Ownership : The Principal, Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Brahmavart PG College, Bithoor Road, Mandhana, Kanpur
Published by : Ira Publishers, Kanpur
Laser Type Setting & Printed by Satguru Graphics & Printers, Kidwai Nagar, Kanpur

प्रार्थना

वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमिय मन्त्र नव, भारत में भर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
काट अन्ध उर के बन्धन स्तर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर।
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
नव-गति, नव-लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ, नव जलद मन्द रव।
नव-नभ के विहग वृन्द को, नव-पर नव स्वर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी
Brahmavart Nirjharni

Editorial Board
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar
Dr. Amit Kumar Dubey
Dr. Bappa Adhikari
Dr. C.K. Shastri

Magazine Name : ब्रह्मावर्त निर्झरिणी / Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Artricles & Creative Writings published in both Hindi & English Languages

Owner & Patron : Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Principal, Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Contact :

E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in

Website : https://bvpgcollege.in/

Published By : Ira Publishers

Contact :

E-mail : irapublishers@gmail.com

Website : https://irapublishers.in/

Aim & Scope : The **"Brahmavart Nirjharani"**, as a creative as well as academic initiative taken by Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur, is a multidisciplinary, annual journal for research articles and creative writings in both Hindi and Eglish languages. Currently, the journal invites articles in the domain of multidisciplinary research areas and creative writing in both Hindi and English. Apart from these, research works in literature, culture, religion, translation, ethnicity and nationalism, sign language, science, technology and software development related are also encouraged in the above-mentioned languages. It intends to inspire writers, poets and artists to create new works that contribute to the cultural heritage of the region. It aims to encourage critical thinking and intellectual discussions on various topics related to Indian culture and history. The authors strictly adhere to the conditions proposed by the editorial board.

About Us : "Brahmavart Nirjharani" is a magazine dedicated to create intellectual temperament and cultivate the creative faculty of the young minds. Our mission is to promoting cultural heritage, fostering intellectual discourse, and providing informative content. We strive to provide high-quality content, encourage critical thinking, or inspire positive change. Our team of experienced editors is committed to delivering insightful analysis and engaging creativity.

Editorial Board (2024)

Name	Institutional Designation	Department/ Subject	Official Postal Address	E-mail Address
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar	Principal	Physics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	vkkatiyar_kn05@csjmu.ac.in
Dr. Amit Kumar Dubey	Assistant Professor	Hindi	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	amitkumart3340kn10@csjmu.ac.in
Dr. Bappa Adhikari	Assistant Professor	English	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	bappaadhikarit3767kn10@csjmu.ac.in
Dr. Chand Kishor Shastri	Assistant Professor	Sanskrit	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	shreechandrat3034kn10@csjmu.ac.in

Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Vol. No. 03 Sl. No. 03

ब्रह्मावर्त महाविद्यालय कुलगीत

ज्ञान मन्दिर है ये, ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
उच्च शैक्षिक केन्द्र की संकल्पना से,
नाम ब्रह्मावर्त हो इस धारणा से।
नींव है उन्नीस सौ सत्तर में स्थापित,
उत्तरी गंगा के तट पर है विराजित।
श्रेष्ठता का आओ उद्‌बोधन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
सृष्टि की उद्‌गम धरा पर हम खड़े हैं,
वीणापाणि माँ की ममता में बढ़े हैं ।
ब्रह्मा का आवर्त ब्रह्मावर्त है ये,
भाल का टीका, हमारा गर्व है ये ।
भाव की रोली से अभिनन्दन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
शास्त्र संस्कृति और कला की वीथिका है,
षष्ठ रागों से सुसज्जित गीतिका है ।
आधुनिक तकनीक का संकाय है ये,
ज्ञान और विज्ञान का पर्याय है ये ।
बोध की गंगा में अवगाहन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
जानकी माँ से मिली संवेदनाएँ,
लक्ष्मीबाई सी प्रखर हैं बालिकाएँ ।
बालको में तेज है लवकुश सरीखा,
राष्ट्रभक्ति शील और अनुराग सीखा ।
सत्य का सम्पूर्ण अनुशीलन करें हम,
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
त्याग, तप, बलिदान की पावन धरा है।
प्रेम और सौहार्द से परिसर भरा है ।
नित नए आयाम गढ़ते जा रहे हैं,
छात्र-शिक्षक यश-ध्वजा फहरा रहे हैं ।
दक्ष निर्देशन में ज्ञानार्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥
साथ मिलकर दृढ़ प्रतिज्ञा यह करें हम,
उत्तरोत्तर उन्नयन पथ पर बढ़ें हम ।
राह की कठिनाइयों का भान होगा,
जीत होगी लक्ष्य का संधान होगा ।
जय विजय उद्‌घोष और गर्जन करें हम ।
आओ अंतस तम का उन्मूलन करें हम ॥

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

03 मई, 2024

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज, मन्धना, कानपुर द्वारा वर्ष 2023–24 की वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त–निर्झरणी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएं छात्र–छात्राओं के समग्र विकास का सशक्त माध्यम होती हैं। इस दृष्टि से पत्रिका का स्वरूप छज्ञत्र हितकारी और उनकी प्रतिभाओं को प्रकाशित करने का उपक्रम होना चाहिए। मुझे आशा है कि प्रकाश्य पत्रिका में ऐसी ज्ञानवर्द्धक पाठ्य सामग्री का समारवेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ उन्हें एक नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर – 208024
(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)
यू.जी.सी. श्रेणी - I विश्वविद्यालय
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur - 208024
(Formelrly Kanpur University Kanpur)
U.G.C. Category - I University

प्रो० विनय कुमार पाठक
कुलपति
Prof. Vinay Kumar Pathak
Vice Chancellor

15 जुलाई, 2024

शुभ सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर** अपनी वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त–निर्झरिणी'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज जनपद का अग्रणी महाविद्यालय है, जिसका शिक्षा जगत के लिए अहम योगदान रहा है। जनपद के शहरी व सुदूर ग्रामीण अंचल से छात्र–छात्राएं उच्च शिक्षा हेतु यहाँ आते हैं, जहाँ पर उच्च शिक्षा के साथ उनके स्वास्थ्य व सर्वांगीण विकास पर विशेष महत्व दिया जाता है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएँ, अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की रचनाशीलता, विचारक क्षमता एवं उनमें छिपी प्रतिभाओं को उभारने के साथ–साथ उनके सर्वांगीण विकास का सरल माध्यम होती है। पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों की छवि प्रतिबिम्बित होती है। आशा करता हूँ कि प्रकाशित होने वाली वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त–निर्झरणी'** रोचक, ज्ञानवर्धक एवं रोजगारपरक पाठ्य सामग्री से परिपूर्ण होगी, जो छात्र–छात्राओं के साथ आम जनमानस के बहुआयामी विकास को उच्चीकृत करने में सहायक सिद्ध होगी।

इन्हीं कामनाओं के साथ महाविद्यालय के उत्तरोत्तर उन्नयन एवं प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु **बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ**।

प्रो0(विनय कुमार पाठक)

प्रो0(डॉ.) वी.के. कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मन्धना
कानपुर।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)

(Formelrly Kanpur University Kanpur 208 024)

प्रो० राजेश कुमार द्विवेदी
निदेशक–महाविद्यालय विकास परिषद

दिनांक : 25-04-2024

शुभकामना सन्देश

महाविद्यालय के सम्मानित प्राचार्य, विद्वान शिक्षकगण, सहपाठीगण और मेरे प्रिय विद्यार्थियों,

सर्वप्रथम, मैं महाविद्यालय की साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैचारिक यात्रा का महत्वपूर्ण माध्यम वार्षिक पत्रिका ''ब्रह्मावर्त निर्झरणी'' के नवीन संस्करण के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई अार शुभकामनाएँ पश्रेषित करता हूँ। ''ब्रह्मावर्त निर्झरणी'' न केवल हमारे विद्यार्थियों की रचनात्मकता और नवीन विचारों का प्रतिबिम्ब है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और शैक्षणिक प्रतिबद्धताओं को भी दर्शाता है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे छात्र न केवल अपने ज्ञान को संवर्धित करते हैं, बल्कि अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ विचारों और अनुभवों का आदान–प्रदान भी करते हैं।

मैं सभी योगदानकर्ताओं तथा संपादकीय टीम को उनके अथक परिश्रम और समर्पण के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ। आपकी मेहनत और लगन इस पत्रिका को सफल बनाने में महत्वपूर्ण रही है।

मैं इस अवसर पर आशा करता हूँ कि ''ब्रह्मावर्त निर्झरणी'' आपके ज्ञान के क्षितिज को विस्तारित करने में सहायक होगी और आपको नई दिशाओं में सोचने के लिए प्रेरित करेगी। यह पत्रिका हम सभी के लिए ज्ञान का एक अमूल्य स्रोत बने, यही मेरी कामना है।

अंत में, मैं सभ्झी विद्यार्थियों को उनकी आगामी शैक्षणिक यात्रा में सफलता की कामना करता हूँ और आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने सपनों को साकार करने में सफल हों।

सधन्यवाद और शुभकामनाएँ।

(प्रो0 राजेश कुमार द्विवेदी)

कार्यालय : क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय परिसर
कानपुर मण्डल कानपुर

प्रोफेसर (डॉ०) मुरलीधर राम गुप्ता

अर्धशासकीय पत्र सं० / 1497 / 2024–25
दिनांक 20 / 07 / 24

शुभकामना–सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपका महाविद्यालय वर्ष 2023–2024 की अपनी वार्षिक पत्रिका ''ब्रह्मावर्त निर्झरणी'' का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका में जो लेख प्रकाशित होंगे उसको पढ़कर सुधीजन लाभान्वित होंगे।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रोफेसर (डॉ0) मुरलीधर राम गुप्ता
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
कानपुर मण्डल, कानपुर

प्रो0 (डॉ0) वी0 के0 कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कॉलेज, मन्धना
कानपुर नगर।

ब्रह्मानन्द पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर
Brahmanand Post Graduate College

The Mall, KANPUR-208004

Ref. :

Date : 30 / 07 / 24

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर** अपनी वार्षिक पत्रिका **'ब्रह्मावर्त–निर्झरिणी'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का विहंगम वर्णन कर महाविद्यालय पत्रिका छात्रों में नई उमंग तथा उत्साह का संचरण कर उनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ब्रह्मावर्त निर्झरणी में छात्र–छात्राओं के ज्ञान एवं प्रतिभा की सार्थक अभिव्यक्ति होगी, उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को निखार का सुअवसर प्रदान करने के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

अनुज प्रो० वी०के० कटियार के मार्गदर्शन में संचालित हो रहा महाविद्यालय और ऊँचाइयों का वरण करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाओं सहित

प्रो0 विवेक द्विवेदी
प्राचार्य
ब्रह्मानन्द महाविद्यालय, कानपुर
एवं
राष्ट्रीय सचिव–AIFUCTO

प्रो0(डॉ.) वी.के. कटियार
प्राचार्य
ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मन्धना
कानपुर।

Virendra Kumar Shukla
Advocate
Secretary
Brahmavart P.G. College
Mandhana, Kanpur - 209217

Estd. : 1970
Office : 0512-2549745
Residence : 0512-2680442
Mob. : 9839217675
104/432, P.Road, Kanpur
E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in
Website : www.bvpgc.co.in

Permanent Affiliation : CSJM University, Kanpur
(Approved U/S 2(f) and 12(B) of UGC Act 1956)

Ref. : ....   Date : ....

सन्देश

मैं यह जानकर अत्यधिक प्रसन्न हूँ कि हमारा महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों, सहकर्मी, शिक्षकों एवं जनसामान्य में लेखन के प्रति रुचि पैदा करने तथा महाविद्यालयीय गतिविधियों को जनसामान्य तक पहुँचाने के उद्देश्य से अपनी ई–पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** के तीसरे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि अपनी ई–पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** में महाविद्यालय के समस्त कार्यक्रमों की जानकारी सहित अनेक शैक्षिक नवाचार प्रकाशित किये जायेंगे तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले प्रतिभागियों के लिए कैरियर कॉउन्सिलिंग सहित अध्ययन सामग्री भी उपलब्ध करायी जायेगी।

मैं ई–पत्रिका **'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'** के सफल प्रकाशन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार को अनेकशः बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव / मन्त्री / प्रबन्धक
ब्रह्मावर्त डिग्री कॉलेज समिति
मन्धना कानपुर नगर

प्राचार्य का सन्देश

मनुष्य ने जिस सुन्दर और समरस संसार की परिकल्पना की है, अभिव्यक्ति उसका बुनियादी मार्ग है। किसी भी शिक्षण संस्थान की पत्रिका न केवल छात्रों की प्रतिभा प्रकट करने का माध्यम होती है अपितु संस्थान की वर्ष भर की उपलब्धियों के आंकलन का प्रतिबिम्ब भी प्रस्तुत करती है।

औपचारिक शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में महाविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति की ओर उन्मुख है। नई (राष्ट्रीय) शिक्षा नीति 2020 का समुचित रूप से क्रियान्वयन सन 2021 से ही जारी है। जिसके अन्तर्गत छात्र–छात्राओं को संकाय स्तर से इतर अपनी रुचि के अनुरूप पाठ्यक्रमों को चुनने की स्वतन्त्रता प्राप्त है। साथ ही, परम्परागत विषयों के साथ ही स्किल डेवलपमेण्ट के कोर्स में भी विद्यार्थी दक्षता प्राप्त कर रहे हैं, जो उन्हें रोजगारोन्मुखी करके आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

गत वर्ष संस्थान की बी०ए० पंचम सेमेस्टर की छात्रा कु० हेमा ने National Princeton Foundation Fellowship for Peace and Learning प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। हिन्दी विभाग के छात्र प्रखर शुक्ल द्वारा अपने पहले ही प्रयास में यू०जी०सी० (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) नेट जे०आर०एफ० परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय की गरिमा में अभिवृद्धि की।

महाविद्यालय द्वारा "समकालीन एवं लोकप्रिय साहित्य में राष्ट्र एवं राष्ट्रीय पहचान का प्रतिनिधित्व" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कराया गया, जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों तथा शोध छात्रों ने सहभागिता कर संगोष्ठी को सफल बनाया। महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के असिस्टेण्ट प्रोफेसर डॉ० अमित कुमार दुबे के निर्देशन में दो शोध छात्र इसी वर्ष पी–एच०डी० हेतु पंजीकृत हुए। महाविद्यालय की प्लेसमेण्ट समिति तथा इंडीवर्स कैरियर कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में व्यावसायिक कौशल (Professional Efficiency) विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कराया गया, जिसमें छात्र–छात्राओं को रिज्यूम बनाना, पी०पी०टी० बनाना, साक्षात्कार की बारीकी से अवगत कराना, ग्रुप डिस्कशन के बारे में बताना तथा व्यावसायिक कौशलता की बारीकी से अवगत कराया गया। इन सभी शैक्षणिक तथा गैर–शैक्षणिक गतिविधियों का प्रतिफल है कि महाविद्यालय निरन्तर प्रगति कर रहा है।

अन्त में, मैं छात्रों, अभिभावकों, गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों और सम्पूर्ण सम्पादकीय टीम को पत्रिका के इस वार्षिकांक के लिए उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए बधाई देता हूँ।

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

सम्पादकीय

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका ''ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'' का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे असीम हर्ष एवं आनन्द की अनुभूति हो रही है। सृष्टि की की उद्गम धरा और महर्षि वाल्मीकि की तपस्थली पर निर्मित यह ब्रह्मावर्त महाविद्यालय छात्रों में अनुशासन, चरित्र निर्माण, राष्ट्र प्रेम जैसे तत्वों का विकास करने तथा उनके अंतस के अंधेरे को दूर कर संस्कार विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने ध्येय वाक्य 'आत्मानं विद्धि' को चरितार्थ कर रहा है। छात्र-छात्राओं ने जिस ललक और उत्साह के साथ अपनी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति करते हुए ज्ञानवर्धक लेख, कविताएँ, गीत, कहानियाँ तथा संस्मरण आदि भेजे , उससे यह वार्षिकांक आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण बन उठा, वहीं योग्य प्राध्यापकों तथा गैर शैक्षणिक कर्मचारियों की रचनाओं तथा शोधपूर्ण लेखों ने वार्षिकांक को सुदृढ़ कलेवर प्रदान किया है।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी के इस वार्षिकांक के सफल प्रकाशन हेतु जिन प्रसिद्ध शिक्षाविदों, राजनीतिक-सामाजिक महानुभावों तथा शुभचिन्तकों ने आशीर्वचन, सन्देश तथा शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं, मैं उनका सम्पादक मण्डल की तरफ से हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्रबन्ध समिति के सचिव एडवोकेट श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल जी तथा प्राचार्य प्रोफेसर वी०के० कटियार जी के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिनके अमूल्य सहयोग से ही इसका प्रकाशन सम्भव हो पाया है। सम्पादक मण्डल के सदस्यों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग के बिना यह किंचित सम्भव न हो पाता।

मैं इस वार्षिकांक के माध्यम से छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि वह अपनी लगनशीलता, कठोर परिश्रम और उन्नत चरित्र के बल पर उत्तरोत्तर उन्नयन पथ पर बढ़ते हुए महाविद्यालय के मस्तक को ऊँचा कर गौरवान्वित करेंगे।

और अंत में...........

पत्रिका में सम्मिलित आप सभी के रचनात्मक सहयोग के लिए ब्रह्मावर्त निर्झरिणी सम्पादक मण्डल आपका हृदय से आभारी है। साथ ही, यदि पत्रिका को और अधिक रचनात्मक एवं ज्ञानवर्द्धक बनाने के लिए अपना कोई सुझाव देना चाहें तो उसका स्वागत है।

डॉ० अमित कुमार दुबे
सम्पादक

महाविद्यालय के वार्षिक आयोजन

अभिव्यक्ति : वार्षिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ छात्रों का सह–शैक्षणिक गतिविधियों में भागीदारी करना शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसी विचार से महाविद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ वर्ष भर सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सत्र 2022–23 से प्रतिवर्ष ''अभिव्यक्ति'' वार्षिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र / छात्राओं को **वीणापाणि सम्मान, अमेय सम्मान, तानसेन संगीत पुरस्कार, यंग अचीवर्स अवार्ड, स्टार परफार्मर अवार्ड** आदि पुरस्कारों से प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है।

उल्लास : वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

स्वस्थ शरीर के लिए शारीरिक व्यायाम तथा खेलकूद की महत्ता के दृष्टिगत वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता ''उल्लास'' का अयोजन महाविद्यालय प्रांगण में सत्र 2022–23 से प्रारम्भ हो गया है। प्रतिभावान् खिलाड़ियों को महाविद्यालय स्तर से आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता उल्लस के अन्तर्गत विविध खेल जैसे लम्बी कूद, ऊँची कूद, चक्का फेंक, 100 मी० दौड़, 400 मी० दौड़ आदि खेलों का आयोजन किया जाता है। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान अर्जित करने वालों को प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है एवं सभी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्लेसमेण्ट कार्यक्रम

महाविद्यालय की प्लेसमेण्ट समिति तथा इंडीवर कैरियर्स, कानपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में व्यावसायिक कौशल (Professional Efficiencyl) विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28–29 फरवरी, 2024 को किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस छात्र–छात्राओं को रिज्यूम बनाना, पी०पी०टी० बनाना, साक्षात्कार की बारीकियों से अवगत कराना, ग्रुप डिस्कशन के बारे में बताना तथा व्यावसायिक कुशलता की बारीकी से अवगत कराया गया। द्वितीय दिवस में छात्रों का मॉक इण्टरव्यू तथा ग्रुप डिस्कशन कराया गया तथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान अर्जित करने वाले छात्रों क्रमशः सजल शुक्ल, बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर, शिवांगी, बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर, तथा श्रुति पाण्डेय, बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर, को प्रमाणपत्र तथा उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में महाविद्यालय के लगभग 100 छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्र की युवा शक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है, जिसकी गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित में कार्य करते हैं। इसका सिद्धान्त और आदर्श वाक्य हैं– ''मैं नहीं आप (Not Me But You)'' जो ''वसुधैव कुटुम्कम्'' का सार बताता है। यह निःस्वार्थ सेवा की भावना का समर्थन और दूसरे के दृष्टिकोण की सराहना करने व प्राणिमात्र के लिए सहानुभूति रखने का आग्रह करता है। जिसका मुख्य उद्देश्य स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के जरिए छात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास करना है। इसी उद्देश्य से ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज, मन्धना, कानपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई का गठन शिक्षा सत्र 2021–22 में हुआ और तब से लेकर अद्यतन यह गतिमान है, जिससे महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके और राष्ट्र निर्माण / उत्थान में वो अपना योगदान दे सके।

रोवर्स–रेंजर्स

व्यक्तित्व का विकास सफलता की कुंजी है। रोवर्स–रेंजर्स के माध्यम से छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। समाजसेवा के अवसर रोवर्स–रेंजर्स के माध्यम से प्राप्त होते हैं। निःस्वार्थ भाव से, त्याग के भाव से समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दूर करने में रोवर्स–रेंजर्स व्यक्तिगत एवं संगठित रूप से अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

वस्तुतः रोवर्स–रेंजर्स युवाओं का एक ऐसा स्वयंसेवी, गैर–राजनीतिक, शैक्षिक आन्दोलन है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए भेदभाव किए बिना प्रत्येक जाति, धर्म, वर्ग के लिए अपनी सेवाएं देने को तत्पर रहता है। यह 1907 में संस्थापक लॉर्ड वैडेन पॉवेल द्वारा संचालित किए गए लक्ष्य, सिद्धान्त तथा पद्धति के अनुरूप अपने कार्यों का निष्पादन करता है।

महाविद्यालय में रोवर्स–रेंजर्स इकाई स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास कर राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार करना है। महाविद्यालय की रोवर्स–रेंजर्स इकाई का नाम राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा भावना से ओत–प्रोत विवेकानन्द तथा निवेदिता के नाम पर **विवेकानन्द–निवेदिता रोवर्स–रेंजर्स इकाई** रखा गया है। इस इकाई में पंजीकृत महाविद्यालय के छात्र प्रत्येक वर्ष विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास कर सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ, विपरीत परिस्थितियों में कार्य करने की समझ, समाज में व्याप्त कुरीतियों, गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा आदि से परिचित होते हैं और उनके समाधान हेतु प्रयास करते हैं। जन जागरूकता, राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता, जाति–धर्म–वर्ग–लिंग आदि से परे होकर सेवा भावना अपने अन्दर विकसित करते हैं, प्रत्येक वर्ष रक्तदान करते हैं तथा पुरातात्त्विक धरोहरों की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

महाविद्यालय की रोवर्स–रेंजर्स इकाई द्वारा प्रत्येक वर्ष विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त शिविरार्थियों को सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय में रोवर्स की एक (01) यूनिट तथा रेंजर्स की दो (02) यूनिट का गठन किया गया है। विशेष प्रशिक्षण शिविर में प्रतिभाग करने वाले छात्र अनुशासित सामाजिक समझ एवं समय के पाबंद तथा सहयोग की भावना से युक्त अपने देश के प्रति निष्ठावान हो जाते हैं।

सत्र 2023-24 की विशेष उपलब्धियाँ

महाविद्यालय की बी०ए० पंचम सेमेस्टर की छात्रा कु० हेमा ने National Princeton Foundation Fellowship for Peace and Learning प्राप्त कर महाविद्यालय के गौरव को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

'समकालीन एवं लोकप्रिय साहित्य में राष्ट्र एवं राष्ट्रीय पहचान का प्रतिनिधित्व' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के प्राध्यापक एवं शोध छात्रों ने सहभागिता कर संगोष्ठी को सफल बनाया।

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के असि० प्रो० डॉ० अमित कुमार दुबे के निर्देशन में दो शोध छात्र (पी–एच०डी०) हेतु पंजीकृत हुए।

महाविद्यालय की प्लेसमेण्ट समिति तथा इंडीवर कैरियर्स, कानपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में व्यावसायिक कौशल (Professional Efficiency) विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28–29 फरवरी, 2024 को किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस छात्र–छात्राओं को रिज्यूम बनाना, पी०पी०टी० बनाना, साक्षात्कार की बारीकियों से अवगत कराना, ग्रुप डिस्कशन के बारे में बताना तथा व्यावसायिक कुशलता की बारीकी से अवगत कराया गया। द्वितीय दिवस में छात्रों का मॉक इण्टरव्यू तथा ग्रुप डिस्कशन कराया गया तथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान अर्जित करने वाले छात्रों क्रमशः सजल शुक्ल (बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर), शिवांगी (बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर), तथा श्रुति पाण्डेय (बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर) को प्रमाणपत्र तथा उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में महाविद्यालय के लगभग 100 छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के छात्र प्रखर शुक्ल ने अपने पहले ही प्रयास में यू०जी०सी० (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) नेट जे०आर०एफ० परीक्षा उत्तीण कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

कुछ कवितायें

प्रखर शुक्ल
शोध छात्र (हिन्दी विभाग)

1. तुम गोदान सी सुलझी हो

तुम 'गोदान' सी सुलझी हो,
मैं 'रेत समाधि' सा उलझा हूँ।
तुम धुंध के जैसी फैली हो,
मैं सर्दी जैसा सिमटा हूँ।
तुम बारिश जैसी बरसी हो,
मैं ओस के जैसा ढुलका हूँ।
तुम भोर के जैसी आती हो,
मैं धूप के जैसा छाता हूँ।
तुम स्वप्न के जैसी सुन्दर हो,
मैं नींद के जैसा भरमाया हूँ।
तुम गंगधार सी बहती हो
मैं बर्फ सा तुम में मिल जाता हूँ।

2. अन्तिम प्रेम

देखता हूँ तुम्हारे चरण-चिन्ह,
बार-बार कई बार,
कितने खामोश हैं ये !
बिल्कुल तुम्हारी तरह,
कोई आहट भी नहीं पायलों की,
इतनी चुप !
बिल्कुल पगली हो तुम, बिल्कुल पगली,
मैं नहीं करता तुमसे प्रेम,
फिर भी क्यों रहती हो इतने करीब,

हाँ, कभी–कभी सोचता जरूर हूँ तुम्हारे बारे में,
जब हार जाता हूँ,
टूट जाता हूँ,
तब तुम ही सबसे प्यारी लगती हो!
तब तुम्हारा शाश्वत प्रेम,
नस–नस में आग बनकर दौड़ जाता है,
विश्व विजित करने की भावना से भर जाता हूँ,
लेकिन मैं तुमसे प्रेम नहीं करता,
हाँ जानता हूँ मैं, तुम जिद्दी हो,
जिस दिन चाहोगी, मुझे चूम लोगी,
मैं तुम्हारा हो जाऊँगा,
तोड़कर हर मर्यादा और बन्धन,
सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा!

3. श्रद्धा और सोपान

संकल्प–विकल्प का बोध नहीं,
लिए नयनों में प्यास घनी।
जा पहुँचा उत्तुंग शिखर पर,
दृग जल में प्रतिबिम्बित,
प्रकृति रहस्य बनी।
क्षितिज फैला दूर तलक,
मन में छूने की चाह घनी।
विस्फरित नेत्र निहारते अपलक,
ज्यों प्रेयसी दूर खड़ी।
सब युक्ति विफल,
हुआ व्यथित हृदय,
हो निराश, बैठ वहीं तरु के पास।
मैं निहारता सौन्दर्य अपार,

तभी दिखी ध्यानस्थ उमा प्रतिमा विशाल।
खड़ा हुआ मैं सायास,
पलक–अपलक, कर स्तुतिबद्ध,
बह उठा दृग छल–छल।
फिर डूब गया मैं शून्य में अनायास
नहीं रहा जगत का कुछ भी आभास।

पाया मैंने क्षितिज मेरे पद–तल
बैठा हूँ मैं उमयांचल तल
मस्तक नत मातृ पद पर
गौरी हस्त निज मस्तक पर।

4. गाँवों में

गाँवों में.....
गरमी के दिनों में,
लू की चादर लपेटे दोपहरी में,
धूल भरी कच्ची सड़क पर,
उलटी बहती हवा,
श्रान्त पथिक के हौसले को,
सर्द कर देती है।

कच्ची सड़कों पर फड़फड़ाती गाड़ियाँ,
घरों का मुँह,
धूल से भर देती हैं,
धुएँ को पीकर
चूल्हे पर खाना पकाती महिला के
जिस्म का चुम्बन करती
पसीने की बूँदें

टपक कर

प्यासी धरती के अधरों में

खिल जाती हैं,

पेड़ों के झुरमुट में

जुआरियों के फड़ पर

जेब को सर्द करते हुए,

'बूँद बाहर' चिल्लाकर

पसीना छलकाते नौजवान

मुँह की ताजगी बरकरार रखते हुए

महफिल को गुलजार करते हैं,

बच्चे दोपहरी को

कच्चे आमों को पाने की चाहत में

गालियों के साये में,

खपा देते हैं

तमाम अपवादों के बीच,

देश की राजनीति यहीं

करवट लेती है.......

5. कविता

स्वर्ग में बैठे धनाढ्य देवताओं तुम नहीं,

मेरे गाँव की सोंधी माटी

तुम साक्षी बनो

मेरे मन मन्दिर में

देव स्थापन की,

मेरी अलकों को बिखेरती
ऐ बसन्ती हवा
तुम साक्षी बनो
मेरे प्रकम्पित पुलकित मन की,

मेरे खेतों में
मदमाती सरसों,
लहराते गेहूँ
तुम साक्षी बनो
मेरे परिणय उत्सव का

ओ अग्निशिखा!
साक्षी बनो
हमारे जन्म-जन्मान्तर के
पवित्र बन्धन के,

ओ असीम समुद्र
साक्षी बनो
मेरे उमड़ते हृदय के

ओ नन्ही ओस की बूँद
साक्षी बनो
मेरे गाल से ढुलकते आँसुओं के

ओ अनन्त आकाश
साक्षी बनो
मेरी नई दुनिया, मेरे नए परिवार के!

माँ तेरे लाल को याद बहुत आती है

शशिकान्त 'शशि शायर'
बी०ए० षष्ठम सेमे०

माँ, कहाँ चली गई तू ?
अब वापस क्यों नहीं आती है ?
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है।
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है ॥1 ॥
चल ठीक है,
तू रूठी है ना मुझसे, अब मैं तुझे मनाऊँगा,
तेरे चरणों की धूल को, अपने माथे पर लगाऊँगा,
जब कभी कोई माँ, अपने लाल को लोरियाँ सुनाती है,
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है।
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है ॥2 ॥
जाती थी जब तू, नानी के घर, उस कच्चे राह से होकर,
मैं भी जाऊँगा, मैं भी जाऊँगा,
बुरा हाल कर लेता था मैं, रो-रो कर,
चल तैयार हो जा,
हँस देती थी, मना लेती थी, झूठ फसाना देकर,
पहना देती थी उन पुराने कपड़ों को, नया बता कर
कपड़े भी नए हैं, नानी के घर से बुलावा भी आता है,
लेकिन तू क्यों नहीं आती है ?
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है।
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है ॥3 ॥
हर किसी त्योहार पर, हमारे लिए खुश हो जाती थी तू,
हजारों काम करने हों, पहले स्वादिष्ट पकवान बनाती थी तू,
होली में घर को गेरू से लीपकर,
बीच आँगन में रंगोली बनाती थी तू,

बड़ों के माथे पर,
अबीर-गुलाल लगाकर, उनका आशीर्वाद लेना,
यह समझाती थी तू,
यह सब समझाने को,
अब तू क्यों नहीं आती है ?
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है।
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है ॥4 ॥
रक्षाबन्धन से एक दिन पहले,
बहनों को फोन लगाती थी,
खोया बना रही हूँ, लड्डू पेड़ा मत लाना,
यह उनको बतलाती थी,
बउवा को घड़ी वाली राखी ले ली है,
खाली हाथ चली आना, यह उनको समझाती थी,
होली भी आती है, रक्षाबन्धन भी आता है,
अब तू क्यों नहीं आती है ?
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है।
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है ॥5 ॥
25 ढेलियाँ, आधा किलो गट्टा, आधा किलो खिलौना,
3 लीटर दूध और न जाने क्या-क्या मँगवाती थी तू,
चौक बनाकर गणेश लक्ष्मी का पूजन करवाती थी तू,
कच्चे ढेले में, दीपक की लौ से काजल पारती थी तू,
लगा लो, नहीं तो दूसरे जनम में उल्लू बनोगे !
यह कहकर, आँखों को काजल से सजा देती थी तू,
हाथी के साँचे में ढला हुआ, शक्कर से बना हुआ,
गट्टा, खिलौना, लइया, चूरा सब आते हैं,
अब तू क्यों नहीं आती है ?
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है।
माँ, तेरे लाल को याद बहुत आती है ॥6 ॥

जोकि मैंने ब्रह्मावर्त के शिक्षकों से सीखा है

शशिकान्त 'शशि शायर'
बी०ए० षष्ठम सेमे०

शून्य से शिखर की ओर बढ़ने का एक तरीका है।
जोकि मैंने ब्रह्मावर्त के शिक्षकों से सीखा है ॥1 ॥

सरलता से, सहजता से, अपनी बात को कह देंगे हम,
बिना किसी अशांति के अपने शब्दों को बल देंगे हम,
संवाद से साध्य को साधने का यह तरीका है,
जोकि मैंने ब्रह्मावर्त के शिक्षकों से सीखा है ॥2 ॥

मान हो, अपमान हो, अपने मूल्यों को न गिरायेंगे हम,
परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों,
किंचित मात्र भी न डगमगायेंगे हम,
प्रकाश रूपी अंधकार से, निकलने का यह सलीका है,
जोकि मैंने ब्रह्मावर्त के शिक्षकों से सीखा है ॥3 ॥

सत्य क्या ? असत्य क्या ? पहचानते हैं हम,
युद्ध में धर्म ही विजयी होता, यह जानते हैं हम,
स्वीकार करना कि सत्य क्या, स्वाद थोड़ा तीखा है,
जोकि मैंने ब्रह्मावर्त के शिक्षकों से सीखा है ॥4 ॥

त्याग मत उस पथ को राही जो चयन तूने किया है

शिवानी तिवारी
बी०ए० द्वितीय सेमे०

त्याग मत उस पथ को राही जो चयन तूने किया है,
कर जतन इसको पाने का यह क्षण सुलभ और नया है।
निराश हो मत एक दिन लक्ष्य तुझको जान लेगा,
कर्म कर निर्भीक हो जग भी तुझको मान देगा।
कर्म के सदुपाय कभी व्यर्थ होते हैं भला?
वीर धैर्य छोड़ किस्मत पर रोते हैं भला?
माना राह कठिन है पर लक्ष्य भी तूने चुना है,
त्याग मत उस पथ को राही जो चयन तूने किया है।
वीर कभी निराशा के मेघों में घिरते हैं भला,
युद्ध बिन वीर विजय की आस करते हैं भला?
दृढ़ संकल्प रह, लक्ष्य अब भी दूर है,
जोश जगा लक्ष्य पाने की, जिससे तू परिपूर्ण है।
पूर्ण कर लक्ष्य को संकल्प जिसका तूने लिया है,
त्याग मत उस पथ को राही जो चयन तूने किया है।

कविता

अनुष्का यादव
बी०एस-सी० षष्ठम सेमे०

ये कैसी आवाज है मुझमें ?
जो हर पल मुझसे कुछ कहती हैं।
अपनी ना सुन, तू क्यों हर पल
दूसरों की खुशी में बहती है।
अपने हक में तू क्यों,
खुलके किसी से कुछ नहीं कहती है
दिन रात मेहनत कर तू
क्यों हर दर्द भी,
खुशी से सहती है ?
सुन जरा, देख तो,
तेरी खुद की धड़कन भी
तुझसे कुछ कहती है।
तुझे भी खुद की पहचान के लिए
कुछ अनोखा करना है।
खुद को आजमा कर,
अपने हित में,
तुझे भी लड़ना है।
आगे फिर संभल संभल कर
तुझको चलना है।
ये दुनिया तो औरत के चरित्र पर,
बे-बुनियाद इल्जाम लगाती है।
मुश्किलों में जो साथ दे
वही तेरा सच्च साथी है।
अपने को पहचान,

क्यों दूसरों से उम्मीद लगाती है?
तू है आदि शक्ति, तुझे!
बस खुद को समझना है।
अपने का भूल,
बस तुझे दुनियादारी में
नहीं उलझना है।

The Baby Morning

Chitranshi Shukla
B.A. 2nd Semester

Oh! The little baby sleeps,
I lap of her mother,
The one who awakens everything,
Who is its creator?
Before awake she started her cacophony,
But, when she opening her golden eyes,
She started sweet chorus,
Like she finds her honey.
The baby started playing with special one,
Now, is that's her father's turn,
But, when she is awaking in this era
She can't seen by anyone.

The Result of the Battle

Shivani Tiwari
B.A. 1st Semester

I was wondering why the India didn't attack over the other land,
Are they don't gain the other land.
As Russia and Ukraine battle,
Which's end is totally fatal,
Yes! That is the reason for India not to attack like cattle.
By this battle what will be they gain,
A lot of grief and a lot of pain.
Yes! They will destroy themselves once again.
They know very well about the sound,
Which is coming from their around,
But they can't listen because they are hungry to get more ground.
Even if they are given a chance to reach on the moon,
They will starting fighting soon,
They wouldn't care whether that's morning or noon.
If they don't take it gravely,
Then the result will totally saidly.

कविता

वर्तिका बाजपेयी
बी०एस-सी० चतुर्थ सेमे०

नारी ही ना रही तो
जीवन कहाँ से लाओगे?
आज जो सम्मान मिला तुमको,
फिर सम्मान कहाँ से पाओगे?
जिसे अपनी सम्पत्ति समझते हो,
वह एक नवदुर्गा रूपी है,
जो अपना अस्तित्व बचाने को,
आज पुरुष के आगे रोती है।
जिसने हजारों दर्द सहे,
पर जन्म दिया है तुमको,
ऐसी सहनशक्ति हो जिसमें,
क्यों हम उसका अपमान करें।
आओ ऐसी नवरूपा को,
हम सब मिलकर प्रणाम करें।
जो मेरी मार्गदर्शक बनकर आएगी,
जो जीवन को नयी दिशा दिखाएगी।

कविता

शालिनी
एम०ए० द्वितीय सेमे०

तन समर्पित, मन समर्पित,
कर दूँ जीवन समर्पित।
ऐ खुदा अब तू ही बता
करूँ और क्या मैं अर्पित।
जब छू जाती है तन में ठण्डी हवा,
ओझलों से निकलकर,
हो जाता है मन ये हर्षित।
करूँ और क्या मैं अर्पित
जग समर्पित जल समर्पित
प्यार का हर पल समर्पित
पल पल की कल्पना समर्पित
चाँद की चाँदनी और रात की निशा समर्पित
ऐ खुदा तू बता और करूँ क्या मैं अर्पित।
कमल से चरण, मोती से नयन,
मणी से दन्ताल और मयंक सा आनन,
देखकर ऐसा अवलोकन होता है मन प्रफुल्लित
बस यही कामना है कि कर दूँ
मैं अपने हर जन्म के प्राण समर्पित
कर्म समर्पित, कर्म की कामना समर्पित
मेरी सारी वासना समर्पित
ऐ खुदा बता और करूँ क्या मैं अर्पित,
कर दिया है अब तो खुद को समर्पित।

Women Empowerment

Namrta
B.Sc. IIIrd Year

Women empowerment is all about supporting and uplifting women to have equal rights, opportunities, depiction in society. Recognition and estimation of their voices, talents and contributions. It's like giving women the power to soar high and break all the stereotypes that come their way.

I want to begin with a story - a well known puzzle. A young boy is involved in a traffic accident, and is immediately rushed to the hospital for urgent surgery. In the hustle and bustle of the hospital environment, the surgeon stride into the operating room. Think of quintessential surgeon- brimming with confidence and authority, a true type - A personality, who knows instinctively how to take charge.

Yes this distinguished surgeon looks down at the boy and shudders, saying, "I can't operate on this boy, it's my son". Indeed, the boy is the surgeon son. Yet the surgeon is not boy's father, who then? it is simple- the surgeon is a she, she is a boy's mother., unfortunately, this is the rub, when it comes to thinking about women in powerful positions, we are too often blinded by the daggers of the mind.

Why women empowerment is important

Women empowerment is incredibly important because it ensures that women have equal opportunities, rights and resources as men. it promotesgender equality, challenges gender stereotypes, and allows women to participate fully in all aspects of life. it's all recognizing and valving the contributions and potential of women in every sphere of society.

The 3L's of women empowerment Learning, Labour and Leadership

Women need to contribute more women in certain countries don't get equal opportunities, which significantly negatively impacts per capita income. Although they account for almost half of the world's economy.

When women enter the workforce, they are frequently held back in roles. With low status, poor status, and low security. Although they account for almost half of the world's economic activity, they make up only half of it's population changing this picture requires a concerted effort to open doors of opportunity.

It boils down to legal changes such as ensuring non-discrimination against women in property and inheritance laws. When empowered to execise leadership, woemn flourish and achieve their true talents and potential.

Importance of women education

"There are over 130 million girls missingout on an education", education is a key for empowering women, as it allows them to acquire the skills and knowledge they need to succeed in their personal and professional lives. Education can break the cycle of poverty.

Importance of women health care

There are signs of hope UNICEF reported a 50% of declinein the maternal mortality ratio from 1990 to 2015 (from 220 to 110 maternal deaths per 100,000 live birth) across the Middle East and North Africa.

Importance in workplace

This includes things like equal pay for equal work, as well as equal opportunities for promotion and leadership positions. According to world bank report reveal some sebering facts within 190 economies studied out of those 190 nations, 86 have laws preventing women from working in specific jobs. In 95 countries, there is no guarantee of equal pay for equal work. In 46 countries, no laws counter sexual harassment in the workplace.

Women empowerment program

Convoy's women's empowerment initiative builds on a foundational concept : when women are empowered, entire communities can be transformed. Women empowerment is an essential part of convoy of hope's mission to combat poverty and hunger and addresses various challenges women face in developing countries.

Conclusion

Educating girls and women is an important step in overcoming poverty. Poverty has been universally affirmed as a main obstacle to enjoyment of human rights. It help in improving family health, economic growth of family and society, self defence is crucial for women to feel empowered and safe.

"Empowered women empower the world."

'अभिव्यक्ति' : सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम

'उल्लास' : वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

रोवर्स एण्ड रेन्जर्स

राष्ट्रीय सेवा योजना

प्लेसमेण्ट सेल कार्यशाला

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

कमल शुक्ल
बी०ए० चतुर्थ सेमे०

गीता के इस श्लोक में धर्म के अर्थ को लेकर लोग भटक जाते हैं। जबकि यह सरल बात है। आइए इसका अर्थ श्रीरामचरित मानस से जोड़कर समझते हैं..........

भगवान् कहते हैं, मेरी शरण में आ जाओ। अब थोड़ा सा उल्टा यह सोचिएकि भगवान् की शरण में जाता कौन है? तो श्रीरामचरित मानस उत्तर करती है–

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

बस जिसने यहाँ यह मर्म समझ लिया, वह गीता के श्लोक में धर्म का अर्थ समझ जाएगा। यहाँ धर्म हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई का संकेत नहीं करता है। धर्म का अर्थ है धारण करना। इसलिए जो हमने कलुषित वृत्तियाँ धारण कर ली हैं, उसकी ओर भगवान् का संकेत है, क्योंकि जन्म तो सबका निर्मल ही होता है।

भगवान् की शरण की बात करते हैं और बिना निर्मल मन के शरणागति होती ही नहीं। इसलिए यहाँ धर्म अर्थात् मन के गुणधर्म का अर्थ है, वह सारे आचरण और व्यवहार, जिससे हमारा निर्मल मन दूषित हो गया है, हमें उनको त्याग देना चाहिए।

यही उक्ति श्रीरामचरित मानस भी कहती है–

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासउं तबहीं॥

और यही गीता का उद्घोष है–

अहं त्वां सर्वपापेभ्योः मोक्षयिष्यामि मा शुचः।

धर्म और राजनीति एक दूसरे के पूरक

कमल शुक्ल
बी०ए० चतुर्थ सेमे०

वास्तव में धर्म से ही राजनीति का उद्‌भव है। यह बात सर्वथा सत्य है। इसलिए यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो धर्म और राजनीति एक दूसरे के पूरक नहीं हो सकते। अब इस बात को दूसरी दृष्टि से देखते हैं– जैसे उदाहरणस्वरूप पिता से ही पूत्र का जन्म है, परन्तु व्यवहारजगत् में दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं। धर्म राजनीति है और राजनीति भी तो विशुद्ध धर्म ही है। हाँ, मैं आजकल की बात नहीं कर रहा हूँ।

धर्म और राजनीति के बीच सबसे स्वाभाविक सम्बन्ध वह है, जिसमें महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नों के धार्मिक उत्तर होते हैं। शासन की वैधता या कानून की सही या गलत जानकारी सभी धार्मिक रूप से प्राप्त की जा सकती हैं। धर्म और राजनीति अलग नहीं हैं, क्योंकि धर्म कई तरीकों से राजनीति को प्रभावित करता रहता है और राजनीति धर्म को भी प्रभावित करती है। भारत में धर्म ने हमेशा राजनीति को प्रेरित किया और राजनीति ने भी अक्सर धर्म की सेवा की। धर्म खुद को राजनीति से अलग नहीं कर सका और न राजनीति धर्म को।

धर्म और राजनीति दोनों का एक समान लक्ष्य है, अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए .... करना। हालांकि, इस उद्देश्य को प्राप्त करने के उनके तरीके अलग-अलग हैं। धार्मिकता यदि पूर्णरूपेण छोड़ दी जाए जो राजनीति अपने मूल उद्देश्य से भटक जाएगी। धर्म समाज को सही राह पर चलने को प्रेरित करता है और राजनीति भी कानून बनाकर सही समाज का निर्माण करना चाहती है।

जब भी धर्म के मूल्यों में गिरावट आती है तो राजनीति का स्तर भी गिरता है। इसीलिए गाँधी जी ने भी कहा था, ''धर्मविहीन राजनीति मधुमक्खी के छत्ते की तरह है, जिसमें मधु को कुछ नहीं होता किन्तु वहाँ काटने वाले विषैलै बर्रे के झुण्ड जरूर होते हैं।''

अवगुण रूपी विष

प्रियंका कमल
पुरा छात्रा, एम०ए० हिन्दी

मेरे इस लेख का उद्देश्य केवल लोगों में मानवता, प्रेमभावना, परोपकार और सहृदयता की भावना का विकास करना है। ये भावनायें आज के युग में कहीं लुप्त सी हो गई हैं। विष से तो आप सभी भली-भांति परिचित होंगे परन्तु मैं आपको आज एक ऐसे विष से परिचित कराना चाहती हूँ, जो किसी दुकान में नहीं अपितु प्रत्येक मनुष्य के भीतर है, वह विष क्या है? अवगुण रूपी विष।

विष अर्थात् किसी जीवन को समाप्त करने वाला, व्यक्ति को मृत्यु की ओर ले जाने वाला ही तो विष है, परन्तु क्या यह विष हमारे और हमारे समाज के लोगों के लिए ज्यादा घातक है? या फिर वह जो आज हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अहंकार, लोभ, इच्छा, कामना, पाप, द्वेष, छल, कपट, भेद-भाव, लड़ाई-झगड़ा आदि अवगुण रूपी विष ज्यादा घातक है, जो समाज और समाज के लोगों, सम्पूर्ण राष्ट्र को पतन की ओर ले जा रहा है। इस पर आपका क्या मत है?

यह दोष अशिक्षित वर्ग में ही नहीं अपितु शिक्षित, सक्षम और सभ्य लोगों में प्राय: देखने को मिल जाता है। अवगुण रूपी दोष, आधुनिक युग में ही नहीं अपितु प्राचीन समय से प्रचलित है। प्राचीन कथाओं में भी हमें उन्हीं सभी अवगुणों का स्वरूप प्राप्त होता है। जैसे- बात करें रामायण और महाभारत में तो उसमें रावण इतना प्रकाण्ड पण्डित और विद्वान था, परन्तु उसमें भी अहंकार, पाप, छल आदि अनेक अवगुण भरे थे और अन्तत: उन्हीं अवगुणों के कारण उसके सम्पूर्ण परिवार और साम्राज्य का विनाश हो गया। इसी प्रकार महाभारत में भी कंस, दुर्योधन और शकुनि जैसे अहंकारी, पापी और लोभी व्यक्ति हुए।

आधुनिक युग में स्थितियाँ इतनी विकृत हो गयी हैं कि जिन पर नियन्त्रण पाना कठिन हो गया है। आज प्रत्येक मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए काम करता है। समाज में रहने वाले ज्यादातर व्यक्ति इन्हीं अवगुणों के जाल में फँसे हुए हैं। इन अवगुण रूपी विष का पान कर रहे हैं।

मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि वह अपने मूल कर्तव्यों से विमुख होता जा रहा है। उसका ध्यान समाज के पीड़ितों के प्रति, निर्धनों के प्रति, वृद्धजनों की ओर आकर्षित ही नहीं होता है। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में, अपने ही लोभ तथा स्वार्थ में लिप्त रहता है। मनुष्य में व्याप्त इन अवगुणों को दूर करने और मनुष्यों में मनुष्यता का संचार करने के लिए हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी कहते हैं-

वह पशु प्रवृत्ति है, जो आप ही आप चरे।

और वह ही मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे॥

इन पंक्तियों के माध्यम से उन्होंने व्यक्तिको अपने दोषों को त्यागने को कहा है। जब हम स्वयं से अपने पारिवारिक

सदस्यों के द्वारा इन अवगुणों से मुक्ति पाने की शुरुआत करेंगे तभी तो हम समाज के अन्य लोगों को भी इस अवगुण रूपी विष का पान करने से रोक सकेंगे। शिवजी ने तो इस लोक कल्याण के लिए विष को अपने कण्ठ में धारण किया था परन्तु हमें इस अवगुण रूपी विष का पान नहीं करना है अपितु इसका परित्याग करना है।

हालांकि समाज में कुछ अच्छे व्यक्ति भी हैं परन्तु बुरे व्यक्तियो ंसे उनकी संख्या बहुत कम है। व्यक्ति जब स्वयं के बारे में सोचने से पहले हृदय में सृष्टिपरक की भावना जागृत करेगा और सदैव वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का पालन करेगा तो ही वह एक सच्चे मनुष्य की भांति अपना जीवन सुख से व्यतीत करेगा। अहंकार, पाप, लोभ आदि दोषों का त्याग करके दया, प्रेम, सद्भावना आदि भावों का विकास यदि हम अपने हृदय में करें तो उनसे हमें जो आत्मिक सुख और आन्तरिक हास्र की अनुभूति प्राप्त होती है, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। इसीलिए हमें अपने अवगुणों को त्याग करके सद्भावों और सद्गुणों को अपनाकर चरित्र का उत्थान करना होगा। जो अपने चारित्रिक गुणों से महकता है और प्रत्येक जीव के प्रति सहृदयता और निष्ठा का भाव रखता है, वही सच्चा मनुष्य है। इसीलिए तो कहते हैं–

इत्र की खुश्बू से तो सब महकते हैं, कोई अपने चारित्रिक गुणों से भी महके।

मेरा परिन्दा (चू चू)

दिव्या शर्मा
एम०ए० तृतीय सेमे०

मेरा चूचू। अपने घोंसले से गिर जाता था। उसे कई बड़े पक्षी अपना आहार बनाना चाहते थे।

मैं वहीं दरख्तों के नीचे छाया में बैठी थी। तभी मेरी नजर इस नवजात चूचू पर पड़ी। मुझे चूचू को देखकर तरस आया और मैं चूचू को उठाकर घर ले आई। अब बड़ी सोच में पड़ गई कि मैं चूचू को क्या खिलाऊंगी ? और कैसे पानी आदि पिलाऊंगी ? फिर मेरे मन में एक उपाय आया कि मैं चूचू को बिस्किट घोल कर एक डण्डी की सहायता से खिलाऊं और मैंने ये किया भी। मेरे चूचू को मैंने बड़ी आसानी से खाना खिलाया। फिर इंजेक्शन की सहायता से मैंने चूचू को पानी पिलाया। अब मैं कभी-कभी सत्तू भी घोलकर उसे खिलाती हूँ। आज मैंने चूचू को पिंजरे से बाहर निकाला तो चूचू मेरे हाथों से फिसल गया। मेरी तो जान ही निकल गयी थी मानो !

लेकिन चूचू ने अपने पंख फैलाकर खुद को महफूज कर लिया था। फिर कुछ समय के पश्चात मैंने क्या देखा, चूचू उड़कर मेरे पैरों में आ बैठ गया। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरा चूचू उड़ना सीख रहा है। जब मैं चूचू को घर लेकर आई थी, तब चूचू के पंख नहीं निकले थे और न ही पता था कि चूचू किस रंग का है ? अभी मेरा चूचू हरा रंग का छोटा सा परिन्दा है। जब मेरा चूचू सही ढंग से उड़ने लगेगा तो मैं चूचू को खुले आसमान में छोड़ दूंगी। मेरा चूचू.......

शिक्षा का महत्व

रिजवान खान
बी०ए० चतुर्थ सेमे०

- शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण का आधार है लेकिन लोगों ने इसे बना रखा व्यापार है।
- शिक्षा वह है जो समाज में सारी बुराइयों का अन्त करती है।
- शिक्षा वह है जिससे सफलता का हर दरवाजा खुलता है।
- शिक्षा वह है जो आपको आपसे मिलती है।
- शिक्षा आपको परम लक्ष्य तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण साधन है।
- वह शिक्षा ही है जो मनुष्य और पशु में अन्तर करती है।
- अगर आप शिक्षित नहीं हैं तो आप इस संसार में अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में संघर्ष करते रहेंगे।
- शिक्षा से ही आप अपनी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति को सुधार सकते हैं।
- शिक्षा के द्वारा ही आप समाज में अपने अधिकारों को जान सकते हैं।
- शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा आप समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।
- शिक्षा के द्वारा ही आप अपने समाज, अपने देश को विकास की राह पर आगे बढ़ा सकते हैं।
- शिक्षा के द्वारा ही आप अपना और लोगों का आने वाला कल बेहतर बना सकते हैं।
- शिक्षा के द्वारा ही आप अपने भौतिक और लौकिक जीवन को बेहतर बना सकते हैं।
- शिक्षा ही वह साधन है जिसके द्वारा आप अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

बड़े भाग मानुष तन पावा

प्रखर शुक्ल
शोध छात्र (हिन्दी विभाग), यू.जी.सी. नेट, जे.आर.एफ.

साथियों, हमारे यहाँ भारतीय साहित्य में अलग-अलग प्रसंग में अलग-अलग तरह से चौरासी लाख योनियों का जिक्र आता है यानि कि इस पृथ्वी पर चौरासी लाख जीव प्रजातियाँ हैं, जिसमें मनुष्य प्रजाति भी शामिल है। श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी भी लिखते हैं-

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ वासी॥

कहा जाता है कि इन चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने का क्रम वर्तुलाकार है अर्थात् मनुष्य रूप में जन्म लेने से पहले हम शेष सभी जीव-जन्तुओं के रूप में जन्म लेते हैं और यही क्रम निरन्तर चलता रहता है। कितना भयावह है यह! आप जरा सोचिए कि मनुष्य के अलावा अन्य जीवधारियों का जीवन कितना अधिक पीड़ा से भरा हुआ है, इसे और अधिक पीड़ादायक बनाता है उनके प्रति हमारा निर्मम व्यवहार, हालांकि आज मनुष्यता भी कम नहीं कराह रही। इस सन्दर्भ में, अच्छी बात यह है कि इन चौरासी लाख योनियों में जन्म मनुष्य के कर्मों के अनुसार होता है यानि कि अगर हम अच्छे कर्म करें तो फिर से मनुष्य देह प्राप्त कर सकते हैं, बिना चौरासी के चक्कर लगाए। शास्त्र और संत कहते हैं कि अगर हम इसी जन्म में बहुत अच्छे कर्म कर लें तो इस चौरासी के फेर से ही मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं और हमेशा के लिए ईश्वर में विलीन हो जाते हैं - वह ईश्वर जो सच्चिदानन्द हैं, पूर्ण हैं, आनन्दस्वरूप हैं, संसार का साररूप हैं, शाश्वत हैं।

साथियों, ऊपर लिखी हुई बात को पढ़कर हल्का सा मुस्कराते हुए सिर झटककर, शायद हम यह कहना चाहें कि यह सब बकवास है, इसमें कुछ भी सत्य नहीं है, यह जीवन जो मिला है, इसके बाद कुछ भी नहीं है - न पुनर्जन्म और न ही मोक्ष, यह सब कोरी कल्पना और भावुकता मात्र है।

साथियों, हमें नहीं पता कि उपर्युक्त दोनों परिकल्पनाओं में से कौन सही है, परन्तु इनसे साररूप एक ही बात निकल कर आती है कि मनुष्य देह मिलना दुर्लभ है - बड़े भाग मानुष तन पावा। जीवों की इतनी प्रजातियों में मनुष्य प्रजाति सर्वश्रेष्ठ है - सबसे अधिक विकसित है, उसकी अपनी संस्कृति है, सभ्यता है। सबसे अधिक विकसित मस्तिष्क मनुष्य का ही है, जिसके कारण अभी आप इसे पढ़कर समझ पा रहे और मैं लिख पाया।

कहा जाता है कि मनुष्य रूप में पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं, जिनके लिए बिना कर्म किए ही सब कुछ इच्छामात्र पर सुलभ है, वे भी कर्मलोक में आना चाहते हैं। जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं-

कर्म का भोग, भोग का कर्म

यही जड़ का चेतन आनन्द।

साथियों, ऐसे देवदुर्लभ मानव जीवन को यूं ही नष्ट नहीं किया जाना चाहिए। इस जीवन को सार्थक करना मनुष्य

मात्र का धर्म है। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि मानव जीवन की सार्थकता किसमें है? सार्थक क्या है? जीवन में सार्थकता घटित कैसे होती है? प्रत्येक मनुष्य के लिए सार्थकता के अलग मायने और जीवन को सार्थक करने के अलग आयाम हो सकते हैं। इस सार्थकता की तलाश में मनुष्य का विवेक ही वह शिक्षक है, जो जीवन के दोराहे में उसको निर्देशित करता है कि यह करो, यह मत करो, यह सही है, यह गलत है। यह विवेक मनुष्य में विकसित कैसे होता है। इसका उत्तर आचार्य तुलसीदास नकार की भाषा में यूं देते हैं-

बिनु सतसंग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥

सतसंग क्याहै? कहाँ प्राप्त होता है यह? साथियों, सत्संग है, श्रेष्ठ विचारों के सम्पर्क में आना और उनका चिन्तन-मनन करना, अच्छी किताबों और श्रेष्ठ लोगों के साथ समय गुजारना। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय इसीलिए स्थापित किए गए हैं कि कुछ वर्षों के अध्ययन, चिन्तन-मनन से विद्यार्थी में छिपी हुई शक्तियां प्रस्फुटित हो जाएं और वह अपना परिचय प्राप्त कर जीवन को सार्थक दिशा दे सके, जिससे उसके विवेकयुक्त प्रखर व्यक्तित्व से सम्पूर्ण राष्ट्रजीवन आलोकित हो सके।

साथियों, अगर सम्पूर्णता में मनुष्यमात्र के जीवन की सार्थकता की बात करें तो कह सकते हैं कि प्रेमपूर्ण जीवन जीना ही सार्थक जीवन जीना है। मनुष्य आखिरकार एक प्राणी ही है कोई मशीन नहीं। हम चाहे जितनी अकूत सम्पत्ति इकट्ठा कर ले, चाहे जितने ऊँचे पद पर पहुँचकर अपने अहंकार को पुष्ट कर लें लेकिन आखिर में मनुष्य होने के कारण सुख की तलाश में हमें भावनाओं के संसार में ही लौटना पड़ेगा। दया, शान्ति, प्रेम, क्षमा, त्याग, विनय आदि गुणों से जो व्यक्ति जितना अधिक सम्पन्न होगा, उसका जीवन असल मायने में उतना ही सुखी होगा। अक्सर हम अपने से भिन्न संस्कार वाले व्यक्तियों को स्वीकार ही नहीं कर पाते और उनमें कमियाँ ही ढूँढते रहते हैं कि वे ऐसे क्यों है, वे वैसे क्यों हैं? ......अगर हम यह स्वीकार कर लें कि वे उनके संस्कार है, , संस्कार बहुत गहरे होते हैं, इसलिए वे जैसे हैं, अच्छे हैं, मैं अपनी जगह सही हूँ और वे भी अपनी जगह सही हैं, गलत कोई नहीं है, सिर्फ नजरिए का फर्क है तो हम पाएंगे कि हम बहुत सारी व्यर्थ की उलझनों से बच गए हैं और मजेदार बात यह है कि हमारी उनके प्रति सकारात्मक सोच धीरे-धीरे उनकी सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन लाएगी और हम एक विराट और प्रेमपूर्ण जीवन जी सकेंगे, जिसमें हमारे प्रेम का आलम्बन चींटी से लेकर परमात्मा तक विस्तारित होगा। ऐसी प्रेममय दशा में हम कह सकते हैं कि मैं प्रेम में हूँ और प्रेम में होना ईश्वर के करीब होना है, मनुष्य जीवन की इससे बड़ी सार्थकता और क्या हो सकती है?

वेदों का निहितार्थ - मानव कल्याण

डॉ० चन्द्रकिशोर शास्त्री
संस्कृत विभाग

पूर्वपक्ष

वेद किस साहित्य के अन्तर्गत आते हैं?

समाधान

वेद वैदिक वाङ्मय अथवा वैदिक साहित्य के अन्तर्गत आते हैं।

पूर्वपक्ष

वैदिक–साहित्य में कौन–कौन से ग्रन्थ आते हैं अर्थात् वैदिक–वाङ्मय को कितने भागों में विभाजित किया गया है अथवा वैदिक–वाङ्मय से तात्पर्य क्या है?

समाधान

वैदिक–वाङ्मय को निम्न पाँच भागों में विभाजित किया गया है।

1. वेद
2. ब्राह्मण ग्रन्थ
3. आरण्यक ग्रन्थ
4. उपनिषद्, और
5. षड् वेदांग

पूर्वपक्ष

वेद का अर्थ क्या है?

समाधान

'वेद'– 'विद्' धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है– जानना।

पूर्वपक्ष

क्या जानना?

समाधान

तत्त्वज्ञान, रहस्य ज्ञान या गूढ़ तत्त्व को जानना।

पूर्वपक्ष

जानने से तात्पर्य (क्या) है?

समाधान

जानने से तात्पर्य है कि वेदों में वह गूढ़ार्थ या रहस्य विद्या या रहस्य ज्ञान छिपा है, जिसको समझकर समाज के समक्ष प्रकट या प्रस्तुत करना है।

पूर्वपक्ष

आखिर वह कौन सा गूढ़ार्थ या रहस्य विद्या या रहस्य ज्ञान है, जो वेदों में निहित है?

समाधान

इस जिज्ञासा के समाधान हेतु वेदों के लक्षण को कहते हैं–

''इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोः अलौकिकमुपायं यो वेदयति स वेदः''

अर्थात् अभीष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट के निवारण का अलौकिक उपाय बतलाने वाले ग्रन्थों को वेद कहते हैं।

पूर्वपक्ष

१. जब वेदों में ऐसा गूढ़ार्थ या तत्त्वार्थ या रहस्य विद्या या रहस्य ज्ञान छिपा हुआ है, तो बताएं आखिर इन वेदों के रचनाकार कौन हैं या उनकी रचना किसने की?

२. क्या वेदों की रचना ऋषियों ने की?

समाधान

नहीं, वेदों की रचना ऋषियों ने नहीं की। ऋषि तो मन्त्र दृष्टा हैं अर्थात् ऋषियों ने वैदिक ऋचाओं या मन्त्रों की शक्ति और सामर्थ्य को पहचाना, उनके रहस्य, गूढ़ार्थ या तत्त्वार्थ को समझा और उनकी व्याख्या समाज के समक्ष प्रस्तुत की अर्थात् वैदिक मन्त्रों के गूढ़ार्थ को समाज के कल्याणार्थ प्रकट किया। वैदिक मन्त्रों की व्याख्या करने के कारण ऋषि मन्त्रदृष्टा कहलाए– **''ऋषयोः मन्त्रदृष्टारः''।**

अर्थात् ऋषि मन्त्रदृष्टा या व्याख्याकार हैं, रचनाकार नहीं। जिस ऋषि ने जिस मन्त्र की व्याख्या की है, वह मन्त्र उस ऋषि के नाम से जाना गया।

पूर्वपक्ष

जब ऋषियों के द्वारा वेदों की रचना नहीं हुई तो फिर किस पुरुष ने वेदों की रचना की

समाधान

इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहते हैं कि वेद तो 'अपौरुषेय' हैं अर्थात् वेदों की रचना पुरुषों के द्वारा नहीं हुई है।

पूर्वपक्ष

जब पुरुषों द्वारा वेदों की रचना नहीं हुई है या पुरुषों ने वेदों की रचना नहीं की है तो फिर किसने की?

समाधान

देवों ने

पूर्वपक्ष

ठीक है मान लेते हैं कि देवों ने वेदों की रचना की है तो फिर यह बताएं कि किस देव ने वेदों की रचना की है, क्या त्रिदेवों ने वेदों की रचना की है, त्रिदेवों में तीनों ने मिलकर एक साथ वेदों की रचना की है या फिर किसी एक ने, यदि एक ने की है तो फिर किसने ?

समाधान

देखिए ! देवों में सबसे समर्थवान् या सबसे शक्तिशाली त्रिदेव हैं, त्रिदेव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश। इन तीनों देवों के कर्म अलग-अलग हैं, जैसे-

1. **ब्रह्मा जी-** सृष्टिकर्ता या सृष्टि की रचना करने वाले।

2. **विष्णु जी-** पालनकर्ता या सृष्टि के संचालक।

3. **महेश या भगवान् शिव-** संहारक या विनाशक अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर सृष्टि का सन्तुलन बनाने हेतु सृष्टि का संहार करने वाले।

देखिए ! चूँकि ब्रह्मा जी सृष्टिकर्ता हैं और वही विधि का विधान करने वाले हैं, इसलिए उन्हें 'विधाता' कहा जाता है। दूसरी तरफ वेदों में मानव के कल्याणार्थ मन्त्र अथवा ऋचाएँ हैं, जिनकी व्याख्या ऋषियों द्वारा की गई है अर्थात् वेदों में मानव कल्याणार्थ उपदेश दिए गए हैं।

अब देखिए ! सृष्टि की रचना और वेदों का निहितार्थ दोनों का सम्बन्ध मानव कल्याण से है। इससे स्पष्ट होता है कि वेदों की रचना ब्रह्मा जी ने ही की है अर्थात् वेदों के रचनाकार के रूप में ब्रह्मा जी को माना जाता है।

पूर्वपक्ष

ठीक है मान लेते हैं कि वेदों की रचना ब्रह्मा जी ने की है, अब बताएँ कि वेदों की संख्या कितनी है?

समाधान

वेदों की संख्या चार है।

पूर्वपक्ष

कौन-कौन

समाधान

१. ऋग्वेद

२. यजुर्वेद

३. सामवेद

४. अथर्ववेद

पूर्वपक्ष

क्या सभी वेदों का प्रतिपाद्य विषय एक है?

समाधान

नहीं , सभी वेदों का प्रतिपाद्य विषय एक नहीं, अपितु अलग-अलग है।

पूर्वपक्ष

सभी वेदों के प्रतिपाद्य विषय बताएँ?

समाधान

ऋग्वेद का प्रतिपाद्य विषय है- ज्ञान।

यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है- कर्म।

सामवेद का प्रतिपाद्य विषय है- उपासना।

और, अथर्ववेद में तीनों विषयों अर्थात् ज्ञान, कर्म तथा उपासना का संग्रह है।

चूँकि वेदों में तीन ही विषय हैं इसलिए प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से सम्मिलित रूप से चारों वेदों को 'वेदत्रयी' के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि ऋग्वेद ज्ञान से, यजुर्वेद कर्मकाण्ड से, सामवेद उपासना से सम्बन्धित है तो वहीं तीनों विषयों का संग्रह अथर्ववेद में पाया जाता है।

वस्तुत: वेदों में मानव को दृष्टिगत रखते हुए ऐसी जीवन पद्धति बतलाई गई है, जिनका सम्यक् आचरण करता हुआ मनुष्य, मनुष्यता को प्राप्त करता हुआ इहलोक में सुखमय जीवन व्यतीत करता हुआ मानवता को प्राप्त कर परम आनन्द को प्राप्त कर सकता है तथा स्वर्ग के द्वार को भी प्रशस्त कर सकता है। इसके विपरीत जिस मनुष्य में मनुष्यता नहीं है, वह मनुष्य तो हो सकता है किन्तु मानव कभी नहीं बन सकता। इसीलिए महाकवि भर्तृहरि ने नीतिशतक में कहा है कि-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

(नीतिशतक १३)

अतएव स्पष्ट है कि वेदों का निहितार्थ मानव कल्याण ही है।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

नवाचार एवं शिक्षा

डॉ० अर्चना सक्सेना
शिक्षाशास्त्र विभाग

इक्कीसवीं सदी महान परिवर्तनों की धुरी है। परिवर्तन समय में जीवन का प्रत्येक पहलू नवाचारों से प्रभावित है। शिक्षा व समाज एक–दूसरे के पूरक हैं क्योंकि शिक्षा में परिवर्तन के साथ–साथ समाज में भी परिवर्तन होता है। परन्तु वर्तमान समय में समाज में परिवर्तन अत्यधिक तीव्र गति से हो रहा है। अतः शिक्षा को समाज के बराबर चलने के लिए स्वयं में परिवर्तन करना अतिआवश्यक है। अपेक्षित परिवर्तनों से शिक्षा में नवीन चेतना आती है, नयी स्फूर्ति आती है, परिवर्तन शिक्षा में नवीनता लाते हैं और शिक्षा प्रगति के पथ पर अग्रसर होती है।

नवाचार दो शब्दों के योग से बना है– 1. नव और 2. आचार, जिसका अर्थ है नवीन आचरण। इस प्रकार नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व–स्थित विधियों और पदार्थों में नवीनता का संचार करता है।

नवाचार शिक्षा में सुनियोजित सकारात्मक परिवर्तन का नाम है। बदलती परिस्थितियों, आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शैक्षिक विचारों, शिक्षण–प्रशिक्षण विधियों, शैक्षिक कार्यक्रमों एवं नीतियों पर पड़ता है, जिसके कारण शिक्षा में नवीन आयामों की स्थापना होती है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के कारण मानव का दृष्टिकोण भौतिकवादी होता जा रहा है। जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि, उपभोक्तावाद के उदय, आर्थिक प्रगति की तीव्रता और सामाजिक परिवर्तनों के कारण व्यक्ति के सम्मुख नित्य नई चुनौतियाँएवं समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। शिक्षा भी इन परिवर्तनों से अछूती नहीं रही। परिणामस्वरूप शिक्षा में भी नवीन चिन्तन, नवीन संरचना एवं नये समाधान की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। फलतः शिक्षा की प्रवृत्तियों, नीतियों एवं संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षा में नवीन आयाम जुड़ने लगे, निरक्षरता की समस्या के समाधान हेतु प्रौढ़ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा सतत् शिक्षा जैसे कार्यक्रम प्रारम्भ किए गये।

जनसंख्या वृद्धि समस्या के समाधान के लिए जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण के लिए पर्यावरण शिक्षा आदि कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाने लगी। शिक्षा के विस्तार के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। गुणवत्ता, सामर्थ्यता एवं उपलब्धता की दृष्टि से उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रयोग शिक्षा में किया जाने लगा। इन सभी कार्यक्रमों, प्रणालियों एवं योजनाओं को शिक्षा के नवाचार के रूप में स्वीकार किया गया।

वनस्पति में है प्रदूषण की काट

डॉ० दिव्या भदौरिया
वनस्पति विज्ञान विभाग

प्रकृति का वरदान : हाईवे से लेकर ड्राइंगरूम तक आपके हाथ है हरियाली का कमाल।

सोचिए कि अगर समुद्र मन्थन के बाद नीलकण्ठ न होते तो हमारा क्या होता? नीलकण्ठ यानि भगवान् शिव, जिन्होंने मन्थन से उत्पन्न विष को पी लिया था। उसको वह भी ग्रहण नहीं कर सकते थे, इसलिए गले में ही रोक लिया। जिसकी वजह से उनका गला नीला पड़ गया और यह नाम मिल गया। एक और बात कही जाती है कि कण-कण में भगवान् हैं, बस उसे देखने की दृष्टि और पाने की लगन होनी चाहिए।

अब बात करते हैं मौजूदा समाज और उसमें बढ़ रहे प्रदूषण की। हालत यह है कि अगर प्रदूषण इसी गति से बढ़ता रहा तो कुछ समय बाद साँस लेना ही नहीं जीना भी दूभर हो जायेगा। ऐसी दशा में यदि ऐसे पौधों का पता चले जो हर तरह के प्रदूषण को सोख लेते हैं, चाहे वह वायु प्रदूषण हो या ध्वनि प्रदूषण; सभी में नुकसान काफी कम हो जाता है। अब यदि ऐसे पौधे या वनस्पति उपलब्ध है तो उसे वरदान की तरह सहेजना चाहिए क्योंकि जो जहर को सोख कर जीवन के लिए जरूरी ऑक्सीजन हमें देते हों, वह तो हमारे लिए नीलकण्ठ जैसे ही हो गए।

मानव के लिए पेड़-पौधे उतने ही जरूरी हैं, जितने हवा और पानी। पेड़ काटकर शहर बसाने की भारी कीमत मानवता चुका रही है। प्रदूषण में जीने के कारण उसे अनगिनत बीमारियां झेलनी पड़ रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार पीपल, बरगद, नीम, हरसिंगार, अशोक, अर्जुन, महुआ, कनेर आदि पारम्परिक पेड़ प्रदूषणरोधी होते हैं। इन पौधों को सड़कों के दोनों ओर और रिहाइशी इलाकों में लगाने से ये धूल के महीन कणों को सोख लेते हैं। ये पौधे वायु को शुद्ध कर वायु प्रदूषण को काफी हद तक रोकते हैं। अनुसन्धान के मुताबिक वे कहते हैं कि प्रदूषण को कम करने में बोगेनविलिया सबसे उपयुक्त पौधा है। इसे घर के बाहर लगाना चाहिए। यह पौधा हवा में मौजूद हानिकारक गैसों जैसे सल्फर डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड और ओजोन को सोख लेता है। आकर्षक रंग के फूल वाले इस पौधे को हाइवे समेत मुख्य मार्गों के डिवाइडर पर लगाने से प्रदूषण की रोकथाम में काफी मदद मिलती है।

पौधे पहरेदार की तरह ही घर की रक्षा पूरी मुस्तैदी के साथ करते हैं और साथ ही सेहत भरी साँस भी हमें देते हैं। हरियाली एक ऐसा आवरण है, जो प्रदूषण को घर की देहरी के अन्दर प्रवेश करने से रोकता है। उद्यान विशेषज्ञ के अनुसार तुलसी, रबर सहित पाँच पौधे पूर्णरूप से प्रदूषणरोधी हैं।

तुलसी का पौधा एक नेचुरल एयर प्यूरीफायर है। यह पौधा 24 में से 20 घण्टे ऑक्सीजन छोड़ता है। तुलसी का पौधा कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई ऑक्साइड व सल्फर डाई ऑक्साइड सोखता है। इसके अलावा बन्द कमरे में अगर शुद्ध वायु और प्रकृति के स्पर्श की जरूरत हो तो रबर का पौधा श्रेष्ठ है। थोड़ी सी धूप भी उन्हें जीवित रखने के लिए

पर्याप्त है। लकड़ी के फर्नीचर द्वारा उत्सर्जित हानिकारक फार्मल्डिहाइड से मुक्त करने की इनकी क्षमता लाजवाब है। मनी प्लाण्ट एक बेल है। इसकी एक पत्ती का आकार 7 से 10 सेण्टीमीटर तक लम्बा होता है। यह पौधा अधिकतर घरों में आसानी से मिल जाता है। इसे किसी खाली बोतल में भी उगाया जा सकता है। इस पौधे में वायु में मौजूद कार्बन डाई ऑक्साइड को ग्रहण करने की क्षमता होती है और यह ऑक्सीजन बाहर निकालता है। मनी प्लाण्ट हवा में CO_2 कम कर हमारे साँस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन देता है। स्नेक प्लाण्ट के पौधे को मदर-इन-लॉज-टंग के नाम से भी जाना जाता है। वायु में मौजूद खतरनाक तत्त्व फॉर्मल्डिहाइड को फिल्टर करने के लिहाज से यह श्रेष्ठ है। चूँकि इस पौधे को ज्यादा धूप की जरूरत नहीं होती और यह नमीयुक्त वातावरण में जीवित रह सकता है। स्लेक प्लाण्ट दूसरे पौधों से उल्टा है। रात में यह कार्बन डाई ऑक्साइड को अवशोषित करके ऑक्सीजन रिलीज करता है, इसलिए इसे बेडरूम में लगाना अच्छा रहता है। स्पाइडर प्लाण्ट को एरोप्लेन प्लाण्ट भी कहा जाता है। सीधी धूप इन पर न पड़े, लेकिन पर्याप्त रोशनी मिलती रहे तो ये हरे-भरे रहते हैं। कई अध्ययनों के अनुसार, स्पाइडर पौधे में भी हवा से फॉर्मल्डिहाइड को हटाने की क्षमता होती है और साथ ही यह हवा से हानिकारक दूषित पदार्थ जैसे कि अमोनिया और बैंजीन को भी निकालता है।

वहीं वैज्ञानिकों ने कुछ पौधों को घर में न लगाने की भी सलाह दी है। उनका कहना है कि सप्तपर्णी (एस्टोनिया), जंगली कीकर, अरण्डी, शहतूत, कामला, कोयी, ओक, देवदार, भरभाण्ड, कान्ता, चौलाई, चिलबिल व राईमुनिया आदि पौधों के परागकण एलर्जी पैदा कर सकते हैं। ये अस्थमा के रोगियों के लिए हानिकारक हैं।

पौधे वातावरण के लिए फेफड़ों का काम करते हैं। ये ऑक्सीजन छोड़ते हैं और वातावरण से कार्बन डाई ऑक्साइड सोख कर हवा को शुद्ध बनाते हैं। पौधों की पत्तियाँ भी सल्फर डाई ऑक्साइड और नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड जैसे खतरनाक तत्त्व अपने में समा लेती हैं और हवा को साफ बनाती हैं। यही नहीं, कई तरह के प्रदूषित तत्त्व पौधों की मखमली टहनियों और पत्तियों पर चिपक जाते हैं और पानी पड़ने पर धुल कर बह जाते हैं। रिहाइशी इलाकों की तुलना में सड़कों पर प्रदूषण ज्यादा होता है। लिहाजा यहाँ ज्यादा घने और चौड़ी पत्तियों वाले पेड़ लगाने चाहिए। पत्तियाँ जितनी ज्यादा घनी और चौड़ी होंगी, उतना ही ज्यादा प्रदूषण सोखने में सक्षम होंगी। शोध के अनुसार, छोटे रेशे वाली पत्तियों के पौधे भी प्रदूषण नियन्त्रित करने में अहम हैं। देवदार और साइप्रस जैसे पौधे अच्छे एयर प्यूरीफायर का काम करते हैं। इन पेड़ों की पत्तियों में PM2.5 के जहरीले तत्त्व सोखने की क्षमता सबसे ज्यादा होती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)

दिनेश कुमार
असि० प्रो०, (अर्थशास्त्र)

21वीं सदी में पूरी दुनिया एक ऐसी प्रौद्योगिकी की ओर अग्रसर है, जिससे सम्पूर्ण जगत में हलचल पैदा हुयी है, जिसे हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम मेधा के नाम से जानते हैं। जिसका आशय बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। इसके जरिये कम्प्यूटर शिक्षा या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है, जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कम्प्यूटर द्वारा नियन्त्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह इंटेलिजेंस तरीके से सोचने वाला साफ्टवेयर बनाने का एक तरीका है। यह न ही सम्पूर्ण जगत में बदलाव ला सकती है बल्कि हमारे दैनिक जीवन, रहने, काम करने, पढ़ने-लिखने, यात्रा करने, कारोबार करने, उद्योग चलाने, शिक्षा के क्षेत्र में (परिवहन), स्वास्थ्य के क्षेत्र में जैसे तमाम तौर-तरीके में बदलाव आ सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से दुनिया एक बहुत बड़े बदलाव के मुहाने पर खड़ी है, जितना कि मानव जीवन में बिजली की खोज से हुआ था। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से इंसानी मशीने बहुत ताकतवर तथा बुद्धिमान हो जायेंगी और इंसानी क्षमताओं से होड़ लेने लगेंगी। जहाँ एक ओर यह और रोमांचित बना देता है, वहीं दूसरी ओर प्रश्न भी करता है कि फिर इंसान का क्या होगा ? आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को इतनी सुर्खियों में इसलिए बना दिया गया कि एक मशीन के भीतर इंसानों जैसी ही सीखने, विश्लेषण करने, सोचने-समझने, समस्याओं का समाधान करने, निर्णय लेने आदि की क्षमताएँ पैदा हो जाने से ये ऐसी क्षमता है, जो इंसान के पास तो है लेकिन दुनिया में किसी दूसरे प्राणी के पास नहीं है लेकिन विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि बेजान मशीनों के भीतर इनसे मिलती-जुलती क्षमता आ गई है।

अवसर एवं उपयोग -

ए०आई० में मानव की संगणकीय तीव्रता, बौद्धिक और संभवतः कल्पनाशीलता की सीमाओं से कुछ के पार पहुँचने की क्षमता है। इससे विनिर्माण, विधि, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, शासन, कृषि, विपणन, संचालन एवं आपूर्ति प्रबन्धन, साइबर सुरक्षा अर्थात शिक्षा, व्यापार, ऑटोमोबाइल, विनिर्माण गेमिंग, सरकारी कार्यों एवं स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में ए०आई० के उपयोग से नये द्वार खुल रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में ए०आई० बुद्धिमत्ता पूर्ण गेम आधारित ज्ञानार्जन का परिवेश, शिक्षण प्रणाली और व्याख्या की प्रौद्योगिकी मुहैया कराती है, लिहाजा इस क्षेत्र में इसका इस्तेमाल शिक्षकों को प्रभावशीलता और छात्रों की दिलचस्पी बढाने में किया जा सकता है। शिक्षा पर ए०आई० समर्थित व्यक्तिकरण से छात्र विशेष के लिए ज्ञानार्जन प्रोफाइल तथा क्षमता, विद्यार्जन के तरीके और अनुभव पर आधारित अनुकूलित अधिगम परिवेश के विकास में सहायता मिल सकती है। दूसरी ओर एमेजॉन, एलेक्सा, गूगल होम, एपल सिरी और माइक्रोसॉफ्ट कोर्टाना जैसे स्मार्ट असिस्टेंस और सम्बन्धित प्रौद्योगिकियों

का इस्तेमाल छात्रों के लिए काफी सहायक बन सकता है। ए०आई० प्रणाली शिक्षकों को ग्रेडिंग गतिविधियों, छात्रों के लिए व्यक्तिगत जवाब मुहैया कराने, सामान्य और बार–बार की कागजी कार्यवाहियों को निपटाने तथा संचालन सम्बन्धित मामलों को दूर करने में सहायता कर सकती है।

भारत में ए०आई० का उपयोग –

भारत में ए०आई० का अपनाये जाने के सन्दर्भ में यदि स्वास्थ्य, शिक्षा एवं कृषि सम्बन्धी क्षेत्रों की बात की जाये तो हमारे देश में प्रति 1000 आबादी पर डॉक्टर का औसत 0.8 है जबकि यह औसत ब्रिटेन में 2.8, आस्ट्रेलिया में 5, चीन में 4 जो प्रति हजार आबादी पर डॉक्टरों की उपलब्धता बताता है। दूसरी ओर भारत में डॉक्टर एक मरीज पर औसत 2 मिनट खर्च करता है जबकि अमेरिका में हर मरीज पर लगभग 20 मिनट खर्च करते हैं। ए०आई० डॉक्टरों पर काम का बोझ घटाने के अलावा उन्हें निदान में सहायता कर सकता है। ए०आई० के उपयोग से सुदूर बसी आबादी को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा मुहैया करायी जा सकती है। यदि शिक्षा के क्षेत्र में बात करें तो विकसित देशों की तुलना में भारत में शिक्षकों का औसत प्रति 1000 छात्र लगभग 50 प्रतिशत कम है। भारत में प्रति 1000 छात्र औसतन मात्र 2.4 शिक्षक हैं जबकि ब्रिटेन में 6.3 हैं लेकिन भारत में मोबाइल फोन के 1.18 अरब, इण्टरनेट के 60 करोड़ और स्मार्टफोन के 37.4 करोड़ उपभोक्ता हैं। भारत में ए०आई० प्रौद्योगिकी को अपनाये जाने की अपार सम्भावनाएं हैं।

ए०आई० इस्तेमाल करने में तमिलनाडु राज्य अग्रणी है, जहाँ हाल ही में ए०आई० आधारित कृषि कीट और रोग पहचान प्रणाली शुरू की है। इस प्रणाली को मोबाइल एप के जरिए पाँच लाख से ज्यादा किसान परिवारों को मुहैया कराया गया है। किसान रोगग्रस्त फसल या कीट की तस्वीर खींचता है और प्रणाली एक ए०आई० एल्गोरिदम के माध्यम से उसकी पहचान कर उससे निपटने के उपाय के बारे में सन्देश भेज देती है। यह प्रणाली किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हो रही है। प्रत्येक दिन लगभग 400 किसान फसल के रोग या कीट की पहचान के लिए अनुरोध भेजते हैं।

चुनौतियाँ और सीमाएं –

सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के संगठन में ए०आई० के सफल उपयोग के रास्ते में कई चुनौतियाँ और सीमाऐ हैं।

स्पष्टता का अभाव आमतौर पर ए०आई० प्रभावी रूप से ब्लैक बॉक्स प्रणाली की तरह काम करती है। यह प्रणाली किसी खास फैसले, वर्गीकरण और अनुमान के पीछे तर्क के बारे में पारदर्शी रूप से नहीं बताती है, जो इस प्रौद्योगिकी की एक बड़ी कमी है। स्पष्टता के इस अभाव का पारदर्शिता और किए गए फैसलों को लागू करने को लेकर विश्वास पर सीधा असर पड़ता है।

सन्दर्भ के प्रति जागरूकता और सीखने की क्षमता का अभाव ए०आई० आधारित प्रणालियाँ दिये गये दायरे और नियमों के अन्दर अच्छा काम करती हैं। लेकिन जिन मामलों में फैसला करने के सन्दर्भ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, उनमें उनकी उपयोगिता सीमित रहती है। मानव के विपरीत ए०आई० आधारित प्रणालियाँ अपने परिवेशस से सीख नहीं सकती,

इस वजह से कुछ खास तरह के क्षेत्रों में ए०आई० का सीमित उपयोग ही किया जा सकता है।

मानवीकरण का अभाव–स्मार्ट सहायता, उपक्रम उत्पादों के लिए माड्यूल, व्यापक तौर पर उपलब्ध क्लाउड लाइब्ररियों और पूर्व निर्धारित डाटा विज्ञान संचालित एप्लीकेशनों जैसे उत्पादों और सेवाओं में ए०आई० आधारित वैसी प्रणालियों का समाहित किया जा रहा है, जिसमें अलग–अलग किस्म की प्रौद्योगिकी या तकनीकी का इस्तेमाल हुआ होगा। लिहाजा ए०आई० के विभिन्न अवयवों से मिले नतीजे भी अलग डाटा और भिन्न परिस्थितियों पर आधारित होंगे। ऐसे में उनकी गुणवत्ता में भी अन्तर होना स्वभाविक है।

स्वचालित यन्त्रों के बढ़ते इस्तेमाल से खासतौर से पुनरावृत्ति वाले कार्यों में संचालन और कौशल के निचले स्तर पर नौकरियों में काफी कमी आयेगी। ए०आई० का यह नतीजा दुनिया भर के देशों में सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता रहेगा, लेकिन इससे विकासशील अर्थव्यवस्थाएं विशेष तौर पर प्रभावित होंगी, जहाँ रोजगार के अवसर पहले ही सीमित हैं। इसीलिए ए०आई० के इस्तेमाल के रणनीति प्रबन्धन की जरूरत है। संगठनों को कई बड़ी चुनौतियों पर सावधानी से विचार करना होगा। ऐसे संगठनों की संख्या बहुत बड़ी है, जो ए०आई० आधारित प्रणालियों के सफलतापूर्वक विकास और उपयोग की अन्दरूनी क्षमता से लैस नहीं हैं। ऐसे संगठन विशेषज्ञ सलाहकार कम्पनियों की संवाएं लेते हैं, जो उनके लिए काफी खर्चीला हो सकता है। इसीलिए कम संसाधन वाले संगठन ए०आई० आधारित प्रणालियों का इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं। इन प्रणालियों के उपयोग के लिए कामगारों में नये और उन्नत कौशल की जरूरत पड़ती है। उन्हें इस तरह के कौशल से युक्त करना सरकार, संगठन एवं व्यक्तियों के सामने एक बड़ी चुनौती है।

शिक्षा को सरल और सुगम बनाने की पहल

डॉ० राघवेन्द्र त्रिपाठी
अर्थशास्त्र विभाग

सांस्कृतिक दृष्टि से भारत प्राचीनकाल से ही विविधताओं वाला देश रहा है। सदियों से यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएं प्रचलित रही हैं। एक बहुभाषी देश होने के नाते हमारे पास अनेक भाषाओं और बोलियों का विपुल भण्डार है। अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का उपयोग होने के बावजूद यह हमें एक साथ बाँधता है और एकजुट रखता है। बहुभाषाी होने की यह विशेषता देशभर में ज्ञान के प्रसार में भी भूमिका निभाती है। हमारी सरकार द्वारा पिछले दिनों लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी इस विचार पर काफी जोर दिया गया कि भारत की बहुभाषी प्रकृति हमारा एक बड़ा आधार है और राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास के लिए इसके समुचित उपयोग की आवश्यकता है।

प्रारम्भिक स्तर पर ही विद्यार्थियों को स्थानीय और मातृभाषाओं में शिक्षण सामग्री और अध्ययन का अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने यह प्रयास किया है। बच्चे अपनी मातृभाषा में शुरूआती ज्ञान अर्जित करने के बाद स्कूली शिक्षा में अपने ज्ञान को उसी गति से विस्तार दे पाएं, इसके लिए स्थानीय भाषाओं के 52 प्राइमर तैयार किए गए हैं। स्थानीय भाषाओं में पठन सामग्री के रूप में तैयार इन प्राइमरों का उद्देश्य बच्चों को न केवल पढने और लिखने में भाषा की दक्षता प्रदान करना है, बल्कि उनमें रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना भी है।

इनमें आदिवासियों एवं जनजातियों को ध्यान में रखकर उनके समाज की भाषाओं को भी शामिल किया गया है। इस पहल से बच्चों में विषय के प्रति अभिरुचि और स्पष्टता बढ़ेगी। बच्चों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास में भी बाजी पलटने वाली साबित होगी। साथ ही वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाने और हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य को आकार देने के लिए एक मजबूत नींव रखने की सरकार की गारण्टी को पूरा करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। प्राइमर उन बच्चों के लिए विशेष तौर पर लाभकारी होंगे, जिन्हें ज्ञान अर्जन के क्रम में विभिन्न भाषाओं से गुजरना पड़ता है।

आमतौर पर बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा की शुरुआत उनकी स्थानीय भाषा से है। स्कूल जाने के पश्चात उन्हें अपनी स्कूली अथवा राज्य विशेष की प्रमुख भाषा में पढ़ाई करनी पड़ती है। ऐसे में उन्हें शुरुआत में ही दिक्कत का सामना करना पड़ता है। यदि स्कूल में ही बच्चों को उनकी अपनी मातृभाषा में समझने की सुविधा प्राप्त हो जाए, तो मूल विषयों के प्रति उनकी समझ और बढ़ेगी। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की पढ़ाई में ये प्राइमर अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। ये प्राइमर शिक्षा क्षेत्र में एक बड़ा कदम होने जा रहा है।

शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने की व्यवस्था मात्र नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र का निर्माण भी

इसका उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हुआ है। देश में आज भी करीब 17 करोड़ बच्चे सामाजिक, आर्थिक और भाषा सम्बन्धी कई अन्य कारणों से पारम्परिक तरीके से स्कूली शिक्षा नहीं हासिल कर पा रहे हैं। इन्हीं परेशानियों का हल राष्ट्रीय शिक्षा नीति में खोजने का प्रयास किया गया है। प्राइमरों के माध्यम से ज्ञान की राह में भाषा सम्बन्धी कठिनाई दूर करने के लिए शिक्षा मन्त्रालय पहले भी ऐसे कई कदम उठा चुका है। दृष्टि, वाक् शक्ति या सुनने की शक्ति न रखने वाले बच्चों के लिए सरकार ई–कामिक के रूप में एक पुस्तिका ला चुकी है। प्रिया सुगम्यता नाम की यह पुस्तिका बच्चों के लिए काफी लाभदायक सिद्ध हो रही है। प्रत्येक सरकार नीति बनाती है, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण है, उस नीति को प्रभावी रूप से धरातल पर उतारना। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को स्वीकार करने के बाद उस पर शत–प्रतिशत अमल हो, यह हमारी सरकार की प्राथमिकता है। बच्चों की बुनियादी साक्षरता मजबूत हो, यही हमारा ध्येय है ताकि हम विकसित भारत के लिए एक सशक्त और विपुल ज्ञान से परिपूर्ण पीढ़ी तैयार कर सकें।

Plants as a Proptectant Against the Insect Pests for Stored Grains

Dr. Sharda Tripathi
Department of Zoology

One of the most important global problem is protecting stored grains from insects. The insects are one of the most hazards in damaging the stored grains. For the control of insects insecticides are continuously used and their toxicity endangers health of animals and food consumers.

Our country is very rich in flora of medicinal and other indigenous plants.They are cheap, target-specific, less hazardous to mammals including human and domestic animals. These are bio-degradable in nature and therefore environment friendly and negative effects on human health led to a resurgence of interest in botanical insecticides due to their minimal costs and ecological side effects. The use of plant products having anti-insect effects and their importance as an alternative to the chemical compounds used in the elimination of insects in different ways, namely repellents, feeding deterrents/antifeedants, toxicants, growth retardants, chemosterilants, and attractants. Biological control is an eco-friendly approach and can be easily followed without any risk. .The potential benefits are that they are economical, environment friendly, effective and low toxicity to non-target organisms including humans. In the future, integration of plant products in pest management strategies would enhance sustainable organic agriculture and prevent stored grain loss in terms of both quality and quantity. It protects the organoleptic quality of food grains. Biological control of stored grain pests may prove effective, if used in appropriate manner, time and space. Aromatic plants have both medicinal and aromatic properties and contain a variety of volatile oils which have insecticidal, anti-feedant and repellent effects on insect pests. Botanical insecticides affect only target insects, not destroy beneficial natural enemies and provide residue-free food and safe environment. I therefore recommend using natural pesticides as an integrated insect pest management which can greatly reduce the use of synthetic insecticides.The only ecological based systematic approach of pest management practices can fulfil the needs of a quality conscious public of the present era.

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री प्रेम नारायण गुप्त	अध्यक्ष
2.	श्री महेन्द्र कुमार शुक्ल	उपाध्यक्ष
3.	श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'	सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक
4.	श्री राकेश कुमार मिश्र	संयुक्त मन्त्री
5.	श्री शंकर दत्त त्रिपाठी 'एडवोकेट'	सदस्य
6.	श्री उमाकान्त द्विवेदी	सदस्य
7.	डॉ० अजीत राय सब्बरवाल	सदस्य
8.	श्री बाँके बिहारी शुक्ल	सदस्य
9.	श्री सुधीर कुमार मिश्र	सदस्य
10.	श्री महेश चन्द्र मिश्र	सदस्य
11.	श्री रमन कुमार मिश्र	सदस्य
12.	प्रो० (डॉ०) विपित्य कुमार कटियार	पदेन सदस्य
13.	डॉ० बप्पा अधिकारी	सदस्य / प्रतिनिधि
14.	श्री दिनेश कुमार गौतम	सदस्य / प्रतिनिधि
15.	श्री अजय कुमार मिश्र	सदस्य / प्रतिनिधि

श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक

ब्रह्मावर्त पी० जी० कॉलेज
BRAHMAVART P.G. COLLEGE

ब्रह्मावर्त पी० जी० कॉलेज
BRAHMAVART P.G. COLLEGE

BRAHMAVART P.G. COLLEGE
WELCOMES YOU

ब्रह्मावर्त पी० जी० कॉलेज
BRAHMAVART P.G. COLLEGE